

देश विदेश की कहानियाँ :



# अकबर वीरबल की कहानियाँ

भाग 1



संकलनकर्ता  
सुषमा गुप्ता

Book Title: Akbar Birbal Ki Kahaniyan (Stories of Akbar and Birbal)

Cover Page picture: Akbar and Birbal

Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: [sushmajee@yahoo.com](mailto:sushmajee@yahoo.com)

Web Site: <http://sushmajee.com/shishusansar/stories-birbal/index-birbal.htm>

Read More such stories at: [www.scribd.com/sushma\\_gupta\\_1](http://www.scribd.com/sushma_gupta_1)

Copyrighted by Sushma Gupta 2018

No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

## Map of India



विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

## Contents

भूमिका .....	4
अकबर और वीरवल का परिचय .....	5
अकबर वीरवल की मुलाकात .....	11
महेश दास वीरवल बना .....	15
एक सेर चूना .....	20
1 सवाल पर सवाल .....	29
2 गधा कौन □ .....	30
3 ऊँट की गर्दन टेढ़ी क्यों □ .....	31
4 वीरवल ने एक पहेली सुलझायी .....	32
5 अकबर के लिये फूल .....	34
6 वीरवल का मीठा जवाब .....	36
7 वीरवल ने मेहमान को पहचाना .....	38
8 थोड़ी कम थोड़ी ज्यादा .....	40
9 वीरवल का ग़ूबसूरत जवाब .....	41
10 सबसे अधिक कुलीन भिखारी .....	42
11 वफादार माली .....	43
12 वीरवल ने अपने आपको बचाया .....	45
13 वीरवल ने न्याय किया .....	47
14 केवल एक सवाल .....	49
15 वीरवल ने एक ज्योतिषी की जान बचायी .....	50
16 जल्दबाज़ी का फैसला .....	51
17 वीरवल ने इम्तिहान पास किया .....	53
19 वीरवल की खिचड़ी .....	56
21 पिंजरे का शेर .....	63
22 राज्य में कितने कौए .....	66
23 अकबर का लालच .....	69
24 आम और उसकी गुठलियाँ .....	71
25 कुछ छोटी छोटी कहानियाँ .....	72

# भूमिका

लोक कथाएँ किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाएँ हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाएँ केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाएँ अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाएँ हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाएँ तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाएँ हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाएँ यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी हैं पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याएँ आयी हैं जिनमें से दो समस्याएँ मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया है ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाएँ “देश विदेश की लोक कथाएँ” नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छपी जा रही हैं। ये लोक कथाएँ आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता

मई 2018

## अकबर और बीरबल का परिचय

बच्चो आज हम तुम्हें अकबर और बीरबल की कहानियाँ सुनाते हैं। पर क्या तुम जानते हो कि यह अकबर कौन था और यह बीरबल कौन था।

अकबर हमारे भारत देश के एक बहुत बड़े राजा हो गये हैं या यों कहना चाहिये कि सम्राट हो गये हैं। इनका पूरा नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह गाजी था। बहुत लम्बा नाम था न? पर वह केवल बादशाह अकबर के नाम से ही मशहूर थे।

अकबर बादशाह का जन्म **1542** ईसवी में हुआ था और यह **1560** ईसवी में राजगद्दी पर बैठे थे। यानी उस समय यह केवल **18** साल के थे जब ये राजगद्दी पर बैठे। **1605** में इनकी मृत्यु हो गयी थी। इस तरह इन्होंने **45** साल राज्य किया।

इनके बारे में तुमको एक और बात पता है क्या? वह यह कि बादशाह अकबर को पढ़ना लिखना नहीं आता था। हालाँकि इनको न पढ़ना आता था न लिखना पर यह थे बहुत होशियार। इन्होंने अपने दरबार में बहुत सारे विद्वानों को इकट्ठा कर रखा था।

इन विद्वानों में से **9** विद्वान बहुत मशहूर थे और वे अकबर के दरबार के नवरत्न या नौ रत्न कहलाते थे। इन नौ रत्नों में भी अकबर के **6** रत्न बहुत ज़्यादा मशहूर थे। ये थे तानसेन, राजा टोडरमल, अबुल फज़ल, फैज़ी, राजा मानसिंह और बीरबल।

बच्चो तानसेन का नाम तो तुमने सुना ही होगा। वह अकबर के समय में ही थे और उनके दरबार के एक रत्न थे। तानसेन हमारे देश के एक बहुत बड़े गायक थे।

कहते हैं कि एक बार राजा अकबर ने उनकी गायकी पर शक करके उनको दीपक राग गाने के लिए कहा। जैसा कि इस राग के नाम से ही लगता है इसके गाने से आग लग जाती थी।

तानसेन ने राजा को बहुत मना किया कि हुजूर आप मुझसे दीपक राग गाने के लिए न कहें गड़बड़ हो जायेगी परन्तु राजा न माने और जिद पकड़ बैठे कि वह आज दीपक राग सुन कर ही रहेंगे।

सो बेचारे तानसेन कुछ न कर सके सिर्फ इतना ही बोले “महाराज इसके परिणाम के फिर आप ही जिम्मेदार होंगे।” और उन्होंने दीपक राग गाना शुरू कर दिया।

वह गाते गये, और गाते गये, और गाते गये। धीरे धीरे उसकी गरमी चारों ओर फैलने लगी। तानसेन गाते गये, और गाते गये, गरमी बढ़ती गयी और बढ़ती गयी। दरबार में बैठे लोगों के बदन गरमी की वजह से जलने लगे।

तानसेन तो अपनी मस्ती में गा रहे थे पर दरबारियों को वहाँ बैठना मुश्किल हो गया। कुछ लोग तो इधर उधर खिसकने के चक्कर में थे पर यह तो राजा और तानसेन दोनों का अपमान था सो उनको वहीं बैठना पड़ा।

तानसेन गाते गये और गाते गये कि अचानक दरबार में रखे दिये जल उठे। अकबर और दरबारी यह देख कर आश्चर्यचकित हो उठे कि गाने से दिये कैसे जल सकते हैं। परन्तु यह आश्चर्य तो उनकी आँखों के सामने ही घट चुका था।

कुछ ही देर में दरबार में लगे कपड़ों में भी आग लग गयी। यह देख कर तो वहाँ बैठे सभी घबरा गये। राजा और दरबारियों ने तानसेन को गाने से रोकने की कोशिश की परन्तु तानसेन अपना गाना गाने में इतने तल्लीन थे कि उनके ऊपर कोई असर ही नहीं हो रहा था। राजा और दरबारी सभी परेशान थे।

तभी किसी ने सलाह दी कि “महाराज, तानसेन की बेटी भी इतना ही अच्छा गाती है। उसको बुलाया जाए तो वह शायद इस आग को शान्त कर सके।”

तुरन्त ही तानसेन की बेटी को बुलाया गया। वह आयी और उसने राग मेघ मल्हार गाना शुरू किया। उसके गाने से आग की गरमी कम होती चली गयी और अन्त में दरबार में वर्षा हो गयी।

बाद में राजा ने तानसेन से पूछा “तानसेन, यह तुमने क्या किया?”

तानसेन सिर झुका कर बोले — “मैंने तो पहले ही कहा था हुजूर कि मुझसे राग दीपक गाने के लिये न कहिये पर आप माने ही नहीं।”

अकबर यह सुन कर चुप हो गये और फिर उन्होंने तानसेन से कभी कोई ऐसी प्रार्थना नहीं की जिसको तानसेन ने मना कर दिया हो। तो बच्चों, ऐसा था तानसेन और उसकी बेटी का गाना और ऐसा था राजा अकबर के दरबार का एक रत्न।

दूसरे थे राजा टोडरमल। राजा टोडरमल राज्य का खजाना संभालते थे। तीसरे थे अबुल फज़ल। ये एक इतिहासकार थे। चौथे इनके भाई फैज़ी थे जो बहुत बड़े कवि थे। पाँचवे थे राजा मानसिंह जो अपनी बहादुरी के लिये मशहूर थे।

और इनमें सबसे ज्यादा मशहूर थे वीरबल जो आज भी अपनी मज़ाकिया कहानियों और हाज़िर जवाबी के सहारे सारे भारत में ज़िन्दा हैं।

वह केवल एक मज़ाकिया ही नहीं बल्कि वह राजा के अपने सलाहकार भी थे। राजा उनसे बहुत सारी परिस्थितियों में सलाह लिया करते थे। राजा उनको अक्सर अपने साथ ही रखते थे क्योंकि क्या पता राजा को वीरबल की कब जरूरत पड़ जाये। है न भई□

जब अकबर और वीरबल की बात छिड़ ही गयी है तो हम तुम्हें अकबर के बारे में कुछ और मज़ेदार बातें भी बता दें। यह तो हम तुम्हें बता ही चुके हैं कि अकबर एक बेपढ़े लिखे बादशाह थे।



अकबर के बेटे का नाम था सलीम जो सम्राट जहाँगीर के नाम से मशहूर हुआ और सम्राट अकबर के बाद भारत की गद्दी पर बैठा।

उसने अपने पिता के बारे लिखा है कि हालाँकि राजा अकबर पढ़ा लिखे नहीं थे पर वह बेपढ़े लिखे बिल्कुल भी नहीं लगते थे। वह बहुत मेहनती राजा थे। कहा जाता है कि वह रात में केवल तीन घण्टे ही सोते थे।

बच्चों सोने की बात पर याद आयी फ्रांस के राजा नेपोलियन की। उसके बारे में भी कुछ ऐसा ही मशहूर है। कहते हैं कि वह तो अपने घोड़े पर ही सोते थे। तो ऐसा होता था बड़े आदमियों के रहने का ढंग।

हाँ तो हम बात कर रहे थे राजा अकबर की और उनके दरबार के नौ रत्नों की। इन नौ रत्नों में दो रत्न सबसे ज़्यादा मशहूर थे □ तानसेन और वीरबल। तानसेन के बारे में तो हमने तुम्हें बता दिया, अब हम तुम्हें वीरबल के बारे में कुछ बताते हैं।

वीरबल राजा के बहुत ही बुद्धिमान सलाहकार थे लेकिन भारत भर में मशहूर थे वह अपनी हाजिर जवाबी के लिये। जानते हो हाजिर जवाबी किसे कहते हैं? हाजिर जवाबी कहते हैं किसी भी परिस्थिति में किसी भी बात का समझदारी से तुरन्त जवाब देना। तो बस वीरबल ऐसे ही थे।

वह बहुत सारे अजीबो गरीब सवालों का तुरन्त ही जवाब दे दिया करते थे और उनके पास हर समस्या का हल रहता था और हर सवाल का जवाब ।

यही वजह थी कि राजा उनको बहुत चाहते थे और हमेशा अपने साथ रखते थे । कई बार वीरबल के जवाब थोड़े कड़वे होते थे परन्तु फिर भी राजा उनकी बातों का बुरा नहीं मानते थे ।

एकाध बार राजा को बुरा भी लगा और उन्होंने वीरबल को दरबार से निकाल भी दिया परन्तु फिर राजा ने महसूस किया कि वह वीरबल के बिना नहीं रह सकते थे सो उन्होंने उनको फिर से वापस बुला लिया । साथ रहते रहते वीरबल राजा के बहुत अच्छे दोस्त भी बन गये थे ।

तो आज हम तुमको उन्हीं वीरबल की कहानियाँ बताते हैं । कहानी पढ़ कर तुम यह जरूर सोचना कि यदि तुम उन परिस्थिति में होते तो तुम क्या करते या तुम क्या कहते ।

पहली दो कहानियाँ वीरबल के परिचय की हैं जैसे वीरबल कौन थे और राजा को कहाँ मिले और फिर वह राजा के दरबार में कैसे आये । उनका नाम वीरबल कैसे पड़ा, आदि आदि ।

उसके बाद हम बतायेंगे वीरबल के उनके अपने किस्से । उनको पढ़ो, हँसो, और वीरबल की अक्लमन्दी की तारीफ करो ।

## अकबर वीरबल की मुलाकात

बादशाह अकबर वीरबल की मुलाकात कैसे हुई, या वीरबल बादशाह अकबर के दरबार में कैसे पहुँचे इसकी कई कहानियाँ कही जाती हैं।

उनमें से कुछ कहानियाँ हम यहाँ दे रहे हैं इनमें कौन सी कहानी सच्ची हो सकती है और कौन सी बनी हुई यह तो तुम इनको पढ़ कर अपने आप ही निश्चय करो।

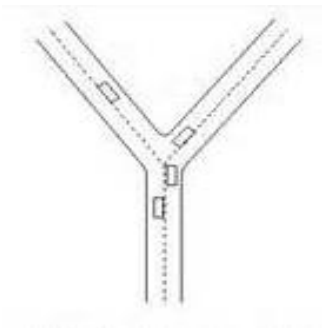
## अकबर वीरबल की मुलाकात-1

तो बच्चों अकबर तो थे एक राजा । उनको शिकार का बहुत शौक था । कई बार वह अपनी पढ़ाई के समय की चोरी करके भी शिकार के लिए निकल जाया करते थे । शायद इसलिये भी वह पढ़ नहीं सके । पर बाद में वे अपने सब दरबारियों से भी अच्छे घुड़सवार और शिकारी बन गये ।

सो एक दिन अकबर अपने दरबारियों के साथ शिकार खेलने गये । वे और उनके कुछ दरबारी शिकार की खोज में आगे निकल गये और बाकी लोग पीछे ही रह गये । कुछ उनके साथ भी थे ।

धीरे धीरे शाम हो गयी और राजा को भूख भी लग आयी और प्यास भी । तभी उनको लगा कि वे जंगल में बहुत दूर निकल आये हैं और रास्ता भटक गये हैं । उनको पता ही नहीं था कि वे किधर जायें ।

आखिरकार वे एक ऐसी जगह निकल आये जहाँ तीन सड़कें मिलती थीं । राजा सड़कें देख कर बहुत खुश हुए कि वह अब इन में से किसी एक सड़क को पकड़ कर अपनी राजधानी आगरा जा सकते थे पर राजधानी जाने के लिये वे कौन सी सड़क पकड़ें यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था ।



सब लोग अभी इस विषय में सोच ही रहे थे कि कौन सी सड़क आगरा जाती होगी कि इतने में उनको एक लड़का आता दिखायी दिया।

उस लड़के को देख कर सबकी जान में जान आयी कि शायद यह लड़का उनको रास्ता बताने में उनकी मदद करेगा। उस लड़के को बुलाया गया।

राजा ने उस लड़के से पूछा — “ओ लड़के, इनमें से कौन सी सड़क आगरा जाती है?”

लड़का हँसा और बोला — “हुजूर, यह तो सभी जानते हैं कि सड़क अपने आप कहीं नहीं जा सकती सो इनमें से कोई भी सड़क आगरा या कहीं और कैसे जा सकती है?”

कह कर वह अपने मजाक पर अपने आप ही हँस दिया। सभी लोग चुपचाप खड़े रह गये कोई कुछ नहीं बोला।

वह लड़का फिर बोला — “हुजूर, सड़कों पर केवल आदमी लोग आते जाते हैं सड़कें अपने आप कहीं नहीं जातीं।”

अबकी बार हँसने की बारी अकबर की थी। वह हँस कर बोले — “तुम ठीक कहते हो शायद। तुम्हारा नाम क्या है?”

लड़का बोला — “महेश दास।”

उसने राजा से पूछा — “हुजूर आप कौन हैं और आपका नाम क्या है?”

बादशाह ने अपनी अँगूठी उतारी और उस लड़के को देते हुए कहा — “लड़के, तुम बादशाह अकबर से बात कर रहे हो जो हिन्दुस्तान का बादशाह है। हमको तुम्हारे जैसे निडर आदमी की ही जरूरत है।

जब तुम बड़े हो जाओ तो तुम हमारे दरबार में आना और यह अँगूठी साथ में लाना। इस अँगूठी से हम तुम्हें तुरन्त ही पहचान लेंगे। अब तुम हमको आगरा जाने का रास्ता बता दो ताकि हम जल्दी ही अपने घर पहुँच सकें।”

महेश दास ने आदर के साथ झुक कर बादशाह को आगरा जाने वाली सड़क बता दी और बादशाह और उसके आदमी उस सड़क पर आगरा की ओर चल दिये।

तो यह थी बादशाह अकबर की वीरबल से पहली मुलाकात। दूसरी कहानी है कि महेश दास वीरबल कैसे बना□

## महेश दास वीरबल बना

महेश दास अब बड़ा हो गया था। उसको अब एक नौकरी चाहिये थी ताकि वह अपने परिवार का पालन पोषण कर सके। इस समय उसको बादशाह अकबर की दी हुई अँगूठी याद आयी।

उसने अपने पास जमा किये हुए पैसे उठाये और वह अँगूठी ली जो उसे बादशाह अकबर ने दी थी और उनको ले कर वह भारत की नयी राजधानी फतेहपुर सीकरी चल दिया।

महेश दास जब फतेहपुर सीकरी पहुँचा तो उसकी शानो शौकत देख कर उसका मन बहुत खुश हो गया। वह भीड़ को छोड़ कर महल की लाल दीवारों की ओर बढ़ गया।

महल का दरवाजा बहुत सजा हुआ था। उसने इससे पहले इतना सुन्दर दरवाजा पहले कभी नहीं देखा था। महेश दास दरवाजे के अन्दर घुसना चाहता था पर वहाँ के चौकीदारों ने उसको अपने भाले हवा में लहरा कर वहीं रोक दिया।

उन्होंने उससे पूछा — “कहाँ जा रहे हो?”

महेश दास नम्रता पूर्वक बोला — “मेरा नाम महेश दास है और मैं बादशाह सलामत से मिलना चाहता हूँ।”

चौकीदारों ने उसका मजाक बनाते हुए कहा — “हाँ, जैसे बादशाह सलामत तो तुम्हारा इन्तजार ही कर रहे हैं कि महेश दास जी कब आयें और मैं कब उनसे मिलूँ।”

महेश दास फिर नम्रता पूर्वक बोला — “जी जनाब, कुछ ऐसा ही समझ लीजिये। और इसीलिये तो मैं यहाँ हूँ। मुझे विश्वास है कि आप लोग बादशाह की लड़ाई में बहुत वीरता से लड़े होंगे पर यहाँ मुझ से पंगा लेने की कोशिश मत करना वरना हार जाओगे।”

यह सुन कर चौकीदार पहले तो कुछ घबरा गया और दो पल चुप रहा फिर हिम्मत करके बोला — “तुमको ऐसा कैसे लगता है कि मैं तुमसे हार जाऊँगा? यदि तुमने अपनी ये बेकार की बातें बन्द नहीं कीं तो मैं अभी अभी तुम्हारा सिर काट सकता हूँ।”

पर महेश दास तो हार मानने वाला था नहीं, सो उसने बादशाह की दी हुई अँगूठी उनको दिखायी। अब वहाँ ऐसा कौन सा आदमी था जो बादशाह की अँगूठी नहीं पहचानता?

वह अँगूठी देख कर चौकीदार बेचारा चुप रह गया। उसकी महेश दास को अन्दर भेजने की इच्छा तो नहीं थी पर वह क्या करता। काफी सोचने के बाद उसने महेश दास को एक शर्त के साथ अन्दर जाने दिया।

वह बोला — “तुम अन्दर जा सकते हो पर एक शर्त पर।”

“वह क्या?”



चौकीदार बोला — “जो भी तुमको बादशाह से मिलेगा उसमें से आधा तुम मुझे दोगे।”

महेश दास मुस्कुराया और बोला — “ठीक है।” और वह अन्दर चला गया।

वह अन्दर चलता गया, चलता गया और आखिर एक बहुत सुन्दर सोने के सिंहासन के सामने पहुँच गया जिसके ऊपर एक शाही आदमी बैठा हुआ था। उसने बादशाह अकबर को तुरन्त ही पहचान लिया।

पास में खड़े हर आदमी को पीछे धक्का देते हुए वह आगे की ओर बढ़ता चला गया और जमीन पर लेट कर बादशाह को सलाम किया और बोला — “ओ पूर्णमासी के चाँद, आपका साया रोज रोज बढ़ता रहे।”

अकबर उसको देख कर मुस्कुराया और बोला — “तुमको क्या चाहिये नौजवान? तुम्हारे मन की क्या मुराद है? हमें बताओ हम उसको पूरी करने की पूरी कोशिश करेंगे।”

महेश दास उठ कर खड़ा होता हुआ बोला — “हुजूर, मैं आपके बुलाने पर यहाँ आया हूँ।” और उसने वह अँगूठी बादशाह सलामत को दे दी जो बादशाह ने उसको कुछ साल पहले दी थी।

बादशाह ने उस अँगूठी को पहचानते हुए कहा — “बोलो तुम्हें क्या चाहिये?”

महेश दास को चौकीदार से किया गया अपना वायदा याद आया तो वह बोला — “जहाँपनाह, मुझे 100 कोड़े मारे जायें।”

बादशाह को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ, वह बोले — “पर तुमने तो कोई जुर्म नहीं किया है फिर हम तुमको 100 कोड़े क्यों मारें?”

महेश दास नम्रता पूर्वक बोला — “सरकार, अब आप अपने वायदे से मत मुकरिये कि आप मेरे मन की इच्छा पूरी करेंगे।”

अकबर अभी भी परेशान था। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि महेश दास ने ऐसी अजीब इच्छा क्यों जाहिर की फिर भी अपने वायदे के अनुसार और महेश दास की इच्छा को ध्यान में रखते हुए उसने महेश दास को 100 कोड़े मारने का हुकुम दे दिया।

और इससे ज्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि महेश दास ने हर कोड़े को चुपचाप सह लिया।

जब महेश दास 50 कोड़े खा चुका तो चिल्लाया — ‘रुकिये।’

अकबर ने पूछा — “क्या हुआ?”

महेश बोला — “मैं जब यहाँ आ रहा था तो आपके चौकीदार ने मुझे आपके महल में आने ही नहीं दिया जब तक कि उसने मुझ से यह वायदा नहीं करा लिया कि मुझे जो कुछ भी आपसे मिलेगा मैं उसे उसके साथ आधा आधा नहीं बाँटूँगा।

तो मैंने अपने हिस्से का आधा इनाम तो ले लिया अब बचे हुए आधे हिस्से को लेने की आपके चौकीदार की बारी है।” यह सुन कर वहाँ जितने भी लोग मौजूद थे सब हँस पड़े।

बाहर से चौकीदार को बुलाया गया और उसे इस प्रकार की रिश्वत लेने पर डाँटा गया और फिर उसको 50 कोड़े मारे गये।

अकबर ने महेश दास से कहा — “तुम अभी भी उतने ही बहादुर हो जितने तुम बचपन में थे। बल्कि तुम अब पहले से भी ज्यादा होशियार हो गये हो।

हम अपने दरबार से रिश्वतखोरों को निकालने के बारे में ही सोच रहे थे कि उनको कैसे निकालें कि तुम आ गये। लेकिन तुमने तो अपनी छोटी सी चाल से वह कर दिखाया जो हम कई कानून बना कर भी नहीं कर सकते थे। आज से अपनी अक्लमन्दी की वजह से तुम बीरबल कहलाओगे और तुम हमारे सलाहकार बन कर रहोगे।”

इस प्रकार महेश दास बीरबल बन गया और उस दिन बीरबल पैदा हुआ। उसी दिन से राजा अकबर ने बीरबल को अपना सलाहकार बना लिया और उसको अपने साथ रखने लगे।

## एक सेर चूना<sup>1</sup>

बीरबल के बादशाह अकबर से मिलने की एक और कहानी ।

जब बादशाह अकबर ने भारत पर राज करना शुरू किया तो उनकी राजधानी पुराना ऐतिहासिक मशहूर शहर आगरा थी । शाही परिवार और दरबारी सब आगरा के किले के अन्दर ही रहते थे ।

किले के पीछे तंग गलियों का एक जाल बिछा हुआ था जहाँ जनता रहती थी । इन गलियों में से एक गली में एक पान की दूकान थी । यह दूकान इसमाइल नाम के आदमी की थी । उसकी दूकान तो छोटी सी थी पर उसका पान बहुत अच्छा बनता था ।



इसमाइल पान के साथ साथ कई खुशबुओं में शरबत भी बेचता था जैसे केवड़ा गुलाब चन्दन आदि । उसकी दूकान के आगे बान की एक खाट<sup>2</sup> हमेशा ही पड़ी रहती थी ताकि वहाँ लोग आराम से बैठ कर पान खा सकें और शरबत पी सकें ।

एक दिन इसमाइल की दूकान पर एक अजनबी आया । उस दिन दिन बहुत गरम था और वह अजनबी बहुत थका थका लग रहा था । यह देख कर इसमाइल ने उसको एक गिलास ठंडा पानी दिया और उससे पूछा कि क्या वह शहर में रहता था ।

<sup>1</sup> A Seer of Lime – an Akbar Birbal tale. Taken from the Web Site :

[http://www.indianetzone.com/30/a\\_seer\\_lime\\_indian\\_folktale.htm](http://www.indianetzone.com/30/a_seer_lime_indian_folktale.htm)

<sup>2</sup> A cot woven with strings – see its picture above.

अजनबी ने ना में सिर हिला कर बताया कि वह शहर में नहीं रहता था। वह वहाँ एक अजनबी था और एक सराय में ठहरा हुआ था जो इसमाइल की दूकान से दो गली दूर थी।

यह सुन कर इसमाइल ने उसके वहाँ आने की वजह पूछी। वह अजनबी उसकी दूकान के सामने पड़ी बान की खाट पर बैठ गया और बोला कि वह वहाँ इस उम्मीद से आया था कि बादशाह उसको अपना दरबारी बना लेंगे।

इसमाइल को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ पर फिर बोला कि ऐसे वहाँ बहुत कम लोग थे जिनको यह इज़्ज़त मिलती थी। पर वह अजनबी फिर भी अपनी किस्मत आजमाना चाहता था।

वह अजनबी इसमाइल की दूकान पर रोज आता, बान की चारपाई पर बैठता, कुछ देर बात करता और फिर चला जाता। वह बहुत जगह घूमा फिरा था, बहुत अक्लमन्द था और बात करने में बहुत चतुर था।

पर देखने में वह हमेशा ही कुछ बेचैन सा लगता था जिसके पास करने के लिये तो कुछ था नहीं सिवाय उस दिन के इन्तजार के जिस दिन उसको बादशाह के दरबार में एक दरबारी की जगह मिल जाने वाली थी।

एक दिन वह अजनबी रोज की तरह वहाँ आया और इसमाइल से एक गिलास शरबत माँगा और उसकी दूकान के सामने पड़ी खाट पर बैठ गया।

इसमाइल ने उसे शरबत दिया तो उसने उसमें से मुश्किल से एक दो घूँट शरबत ही पिया होगा कि एक आदमी उस गली में दौड़ता हुआ वहाँ आया और एकदम से इसमाइल की दूकान के आगे आकर रुक गया।

वह बहुत जोर से हॉफ रहा था और बहुत जल्दी में लग रहा था। उसने इसमाइल से तुरन्त ही उसको एक सेर चूना देने के लिये कहा। उसकी यह अजीब सी माँग सुन कर इसमाइल बहुत जोर से हँस पड़ा और उससे बोला कि वह कुछ धीरज तो रखे।

पर वह आदमी तो बहुत ही जल्दी में था क्योंकि वह एक सेर चूना तो बादशाह अकबर ने उससे खुद ने मँगवाया था।

इस सारे समय वह अजनबी कभी इसके मुँह की तरफ कभी उसके मुँह की तरफ देखता रहा। उसके चेहरे पर उत्सुकता छापी हुई थी। अब वह खड़ा हुआ और अधिकारपूर्ण शब्दों में बोला — “पर तुम्हारे बादशाह को एक सेर चूना क्यों चाहिये।”

फिर उसने उससे यह भी पूछा कि क्या वह बादशाह के लिये काम करता था। उस आदमी ने बड़े घमंड से जवाब दिया कि “हाँ मैं बादशाह के लिये काम करता हूँ।

मैं बादशाह के हर खाने के बाद के लिये पान बनाया करता हूँ। पान बना कर उसको सोने के वर्क में लपेटा करता हूँ और उसको सोने की एक प्लेट में उनको दिया करता हूँ।”

आज भी जब बादशाह का दोपहर का खाना खत्म हो गया तो उन्होंने पान खाया पर अगले ही पल वह घूमे और उन्होंने मुझसे एक सेर चूना लाने के लिये कहा।”

अब अजनबी ने पूछा — “जब बादशाह ने तुमसे यह लाने के लिये कहा तो क्या वह गुस्सा थे।”

क्योंकि नौकर लोगों को बादशाह के चेहरे की तरफ देखने की इजाज़त नहीं थी सो वह यह नहीं बता सका कि यह कहते समय वह गुस्सा थे या नहीं सो वह बोला “पता नहीं।”

अजनबी ने तब उस आदमी से कहा कि अगर उसको अपनी जान बचानी है तो उसको एक सेर चूने की बजाय हलवाई की दूकान से एक सेर दही खरीद कर ले जाना चाहिये और तुरन्त ही बादशाह के पास पहुँचना चाहिये।

उस आदमी ने ऐसा ही किया। उसने तुरन्त ही एक हलवाई की दूकान से एक सेर दही खरीदा और किले की तरफ भाग गया। बादशाह ने उस आदमी पर एक निगाह डाली और उससे पूछा कि क्या वह एक सेर चूना लाया।

आदमी डर कर बोला “जी हुजूर।”

बादशाह बोले “तो बैठ जाओ और खाओ इसे।” और यह कह कर वह दरबार चले गये। आदमी ने अपना दही वाला मिट्टी का बरतन उठाया और खुशी खुशी उसमें से सारा दही पी गया।

अगली सुबह वह आदमी काम पर फिर से वापस आ गया था। जैसे ही बादशाह ने उसको देखा तो उनका चेहरा तो उसको देख कर गुस्से से लाल हो गया।

उन्होंने उससे तुरन्त ही पूछा कि क्या कल उसने वह एक सेर चूना सारा खा लिया था। यह सुन कर तो वह बादशाह के कदमों पर गिर पड़ा और उनको सारी कहानी कह सुनायी।

बिना वक्त बरबाद किये बादशाह ने उस आदमी को इसमाइल की दूकान से बुला भेजा। एक घंटे से कम में वह अजनबी बादशाह के सामने शाही दरबार में खड़ा था।

वह बड़े मुगल बादशाह हिन्दुस्तान की गद्दी पर बैठे हुए थे। वह अपने रेशमी कपड़ों और जवाहरात जड़ा ताज पहने शाही लग रहे थे। उनकी आवाज भी हुकुम देने वाली और कड़क थी। पर अजनबी उनके सामने बड़े आराम से खड़ा था।

बादशाह ने उस अजनबी से पूछा कि उसने उस आदमी को एक सेर चूने की बजाय एक सेर दही ले जाने की सलाह क्यों दी।

अजनबी ने अपना सिर झुकाया और बोला कि उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि एक आदमी एक सेर चूना ले कर जा रहा था।

उसने उस आदमी से वे हालात पूछे जिनमें उसको एक सेर चूना लाने के लिये कहा गया था। उस आदमी से सारी कहानी सुनने के बाद उसको लगा कि उस आदमी ने शायद आपके पान में ज़्यादा



चूना लगा दिया होगा और आपकी शाही जबान कट गयी होगी। तो सजा के तौर पर आपने उससे एक सेर चूना मँगवाया ताकि आप उसको उसे खिला कर सजा दे सकें।

सो उसकी जान बचाने के लिये मैंने उसको सलाह दी कि वह एक सेर चूने की बजाय एक सेर दही ले जाये।”

अकबर अजनबी की सूझबूझ से तो बहुत प्रभावित हुए पर जो कुछ उसने किया उससे वह बहुत गुस्सा थे।

इस बारे में पूछने पर अजनबी ने फिर अपना सिर झुकाया और उनसे माफी माँगी कि ऐसा करके वह तो बस एक सीधे सादे आदमी की ज़िन्दगी बचाना चाहता था। इसके अलावा वह एक बादशाह को थोड़े से गुस्से में किसी भोले भाले आदमी की ज़िन्दगी लेने के पाप से बचाना चाहता था।

बादशाह उसका यह जवाब सुन कर भी बहुत खुश हुए। उन्होंने उसका नाम पूछा तो अजनबी ने जवाब दिया “बीरबल”।

बादशाह अकबर तो बहुत ही खुश हो गये और उस अजनबी को जो अब अजनबी नहीं था बीरबल था अपने दरबारियों में शामिल कर लिया और वहाँ उसको एक इज़्ज़त की जगह दी।

यह सुन कर बीरबल भी बहुत खुश हो गये उन्होंने भी बादशाह को जमीन तक झुक कर बन्दगी की। इस तरह बीरबल अकबर बादशाह के दरबार में घुसे।



अकबर बीरबल की  
कुछ लोकप्रिय और रोचक कहानियाँ



## 1 सवाल पर सवाल

एक दिन बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा — “बीरबल, क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारी पत्नी के हाथ में कितनी चूड़ियाँ हैं?”

बीरबल अकबर के इस ऊटपटाँग सवाल से कुछ चौंक से गये पर फिर सादगी से बोले — “नहीं हुजूर, मैं नहीं बता सकता।”

अकबर बोले — “अरे, तुम रोज तो उसका हाथ देखते हो फिर भी नहीं बता सकते कि उसके हाथ में कितनी चूड़ियाँ हैं? बड़े कमाल की बात है।”

बीरबल को अकबर की यह बात कुछ जमी नहीं सो वह कुछ पल तो सोचते रहे, फिर बोले — “आइये, बगीचे में चलते हैं मैं वहाँ आपको बताऊँगा कि ऐसा कैसे हुआ।”

पहले तो बादशाह अकबर की समझ में नहीं आया कि बागीचे से इसका क्या सम्बन्ध है पर वह क्योंकि बीरबल से ज़्यादा बहस नहीं किया करते थे सो वे दोनों शाही बगीचे में आ पहुँचे।

बागीचे में जाने के लिये कुछ सीढ़ियाँ उतरनी पड़तीं थीं सो वे सीढ़ियाँ उतर कर बगीचे में आ गये।

कुछ देर बाद घूमते घूमते बीरबल ने पूछा — “जहाँपनाह, अभी जो हम बागीचे की सीढ़ियाँ उतर कर आये वे कितनी थीं?”

अकबर यह सुन कर चौंक गये पर फिर अपना सवाल याद कर के चुप रह गये ।

बीरबल नरमी से बोले — “बादशाह सलामत, आप भी तो ये सीढ़ियाँ रोज उतरते चढ़ते हैं और आपको भी यह याद नहीं कि ये सीढ़ियाँ कितनी हैं । बस ऐसे ही कुछ समझ लीजिये ।”

## 2 गधा कौन □

एक बार बादशाह अकबर अपने दो बेटों और बीरबल के साथ नदी की ओर गये । नदी के किनारे पहुँच कर बादशाह और उनके दोनों बेटों की इच्छा नदी में नहाने की हुई सो तीनों ने अपने अपने कपड़े उतारे और बीरबल को थमा दिये और खुद नदी में नहाने चले गये ।

बीरबल उनके कपड़े अपने कन्धे पर रखे उनके नदी से बाहर निकलने का इन्तज़ार करते रहे । अकबर ने जब बीरबल को इस प्रकार कपड़े कन्धे पर रखे देखा तो उनको मजाक सूझा ।

अकबर ने बीरबल से कहा — “बीरबल, तुमको देख कर ऐसा लग रहा है मानो तुम्हारे ऊपर दो गधे का बोझ लदा हो ।”

सो बच्चों बीरबल हाजिर जवाब तो थे ही, तुरन्त बोले — “धोबी का गधा तो केवल एक ही गधे का बोझ उठाता है यहाँ तो मैं तीन गधों का बोझ लादे खड़ा हूँ ।”

### 3 ऊँट की गर्दन टेढ़ी क्यों □

बादशाह अकबर बीरबल की हाजिर जवाबी से बहुत खुश थे सो एक दिन उन्होंने बीरबल से वायदा किया कि वह उनको बहुत सारी भेंट देंगे।

पर कई दिन गुजर गये और बादशाह की भेंट का कोई अता पता ही नहीं था। बीरबल बादशाह की इस बात से बहुत नाखुश थे पर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह अपनी भेंट लेने के लिये क्या करें।

एक दिन बादशाह अकबर बीरबल के साथ यमुना नदी के किनारे टहल रहे थे कि उनको एक ऊँट दिखायी दिया। कुछ देर तक तो बादशाह उस ऊँट को देखते रहे फिर बीरबल से बोले — “बीरबल, यह तो बताओ कि ऊँट की गर्दन टेढ़ी क्यों है?”

बीरबल ने सोचा यही समय ठीक है बादशाह को उनका वायदा याद दिलाने की, सो वह कुछ पल सोच कर बोले — “हुजूर, ऐसा लगता है कि ऊँट ने कभी किसी से कोई वायदा किया है और उसे भूल गया है इसी वजह से उसकी गर्दान टेढ़ी है।

हमारे धर्म की किताबों में लिखा है कि यदि कोई किसी से कोई वायदा करके भूल जाये तो उसकी गर्दन टेढ़ी हो जायेगी। इसलिये

ऊँट की गरदन टेढ़ी होने की मुझे तो यही एक वजह दिखायी देती है।”

यह सुन कर अकबर को वीरबल से किया हुआ अपना वायदा याद आ गया और यह भी याद आ गया कि उन्होंने अपने वायदे के अनुसार वीरबल को अभी वे भेंटें नहीं दी हैं।

महल में पहुँच कर बादशाह ने तुरन्त ही वीरबल को भेंटें दे दी। तो बच्चों, ऐसे माँगीं वीरबल ने अपनी भेंटें।

## 4 वीरबल ने एक पहेली सुलझायी

बहुत सारे दरबारी वीरबल से जला करते थे क्योंकि वीरबल बादशाह के दाहिने हाथ थे और बादशाह उनसे बहुत प्रसन्न थे।

सो एक दिन कुछ दरबारी वीरबल के दरबार में आने से पहले बादशाह के पास आये और बोले — “महाराज, हम आपके शाही सलाहकार बनना चाहते हैं।”

बादशाह को इसमें कोई चाल नजर नहीं आई सो उन्होंने सीधे स्वभाव कहा — “हाँ हाँ क्यों नहीं। परन्तु तुम्हें हमारा सलाहकार बनने के लिये एक इम्तिहान पास करना होगा और जो कोई भी वह इम्तिहान पास कर लेगा वही हमारा शाही सलाहकार बनेगा।”



उन दरबारियों के पास इस शर्त पर राजी होने के अलावा और कोई चारा नहीं था सो वे राजी हो गये।

अब बच्चों अकबर ने क्या किया कि उन्होंने अपनी कमर का कपड़ा खोल दिया और नीचे फर्श पर लेट गये और उन सब दरबारियों से कहा कि वे उनको उस कपड़े से सिर से पाँव तक ढक दें।

हर दरबारी ने जो शाही सलाहकार बनना चाहता था अपनी पूरी कोशिश कर ली कि वह बादशाह को उस कपड़े से सिर से पाँव तक पूरा पूरा ढक दे परन्तु बादशाह का शरीर कभी तो सिर की ओर से खुला रह जाता और कभी पाँव की ओर से।

यह देख कर सभी दरबारी बहुत परेशान हुए। उन्होंने अपनी पूरी अक्ल लड़ा ली मगर वे राजा को सिर से पाँव तक उस कपड़े से ढकने में कामयाब नहीं हो सके। वे सब अपना सा मुँह ले कर एक ओर को बैठ गये।

इतने में वीरबल दरबार में आ गये। वीरबल को देख कर बादशाह अकबर बहुत खुश हुए। वीरबल ने पूछा — “यह सब क्या हो रहा है जहाँपनाह?”

अकबर ने वीरबल से भी यही काम करने के लिये कहा। वीरबल ने कुछ पल सोचा और फिर राजा से बड़ी नरमी से कहा — “हुजूर, आप ज़रा अपने घुटने ऊपर की ओर सिकोड़ लें।”

जैसे ही राजा ने अपने घुटने थोड़े से ऊपर की ओर सिकोड़े बीरबल ने उस कपड़े से राजा को पूरा ढक दिया।

वे दरबारी जो शाही सलाहकार बनने के लिये आये थे वे सब शरमिन्दा हो कर अपनी अपनी जगह पर बैठ गये और फिर उन्होंने कभी शाही सलाहकार बनने का नाम भी नहीं लिया।

तो बच्चों ऐसा था बीरबल का दिमाग।

## 5 अकबर के लिये फूल

एक दिन अकबर अपने शाही बगीचे में घूम रहे थे। उनके साथ बीरबल और उनके कुछ दरबारी भी थे। फूलों का मौसम था सो बगीचे में बहुर सारे फूल खिले हुए थे।

एक कवि ने एक सुन्दर फूल की इशारा करते हुए बादशाह से कहा — “देखिए जहाँपनाह, यह फूल कितना सुन्दर है। कोई भी आदमी इतनी सुन्दर चीज़ नहीं बना सकता।”

यह सुन कर बीरबल बोले — “मैं यह नहीं मानता। कई बार आदमी इससे ज़्यादा सुन्दर चीज़ें बना सकता है।”

अकबर बीरबल की बात काटते हुए बोले — “बीरबल, तुम बेकार की बात कर रहे हो। यह फूल तो वास्तव में बहुत ही सुन्दर है। कोई आदमी इन फूलों से सुन्दर फूल कैसे बना सकता है?”

बीरबल बेचारे चुप हो गये पर वह उस बात को भूले नहीं।



कुछ दिनों के बाद बीरबल ने आगरा के एक बहुत ही बढ़िया कारीगर को पेश किया। उसने बादशाह को संगमरमर का बना एक बहुत ही सुन्दर गुलदस्ता पेश किया।

अकबर उस गुलदस्ते को देखते ही रह गये। वह गुलदस्ता तो वाकई बहुत ही सुन्दर था। अकबर ने उस कारीगर को खुश हो कर 1000 सोने के सिक्के इनाम में दिये।

ठीक उसी समय दरबार में एक लड़का आया और बादशाह को ताजे फूलों का एक गुलदस्ता भेंट किया। बादशाह उस गुलदस्ते को देख कर भी बहुत खुश हुए और उन्होंने उस लड़के को चाँदी का एक सिक्का दिया।



बीरबल बोले — “तो आपको संगमरमर का गुलदस्ता असली फूलों के गुलदस्ते से अधिक सुन्दर लगा?”

अकबर समझ गये कि बीरबल ऐसा क्यों कह रहे हैं।

## 6 बीरबल का मीठा जवाब

अकबर अपने दरबारियों से अक्सर बहुत सारे सवाल पूछा करते थे। एक दिन जब वह शाही दरबार में पधारे और अपनी कुरसी पर बैठ गये तो उन्होंने दरबारियों से पूछा — “उस आदमी को क्या सजा दी जाये जिसने मेरी मूँछें खींचीं हों?”

अब बच्चों बादशाह की मूँछें खींचना कोई आसान काम तो है नहीं कि कोई भी आये और आ कर उनकी मूँछें खींच ले। इसलिये जिसने भी बादशाह की मूँछें खींची हैं उसको सजा तो मिलनी ही चाहिये और वह भी कड़ी से कड़ी।

सो किसी ने कहा “उसका सिर कटवा देना चाहिये।”

तो दूसरा बोला “उसको फाँसी पर लटका देना चाहिये।”

एक और बोला “हुजूर उसको तो कोड़े मारने चाहिये।”

बादशाह इन सब सजाओं को सुन कर खुश नहीं थे सो उन्होंने बीरबल से पूछा। राजा बीरबल पर बहुत विश्वास करते थे।

बीरबल एक मिनट तो चुप रहे फिर धीरे से मुस्कुरा कर बोले — “जहाँपनाह, उसको तो मिठाई देनी चाहिये।”

अकबर और सारे दरबारी बीरबल के इस जवाब पर हक्का बक्का रह गये कि कहाँ तो हम सजा की बात कर रहे थे और कहाँ

बीरबल उस आदमी को मिठाई देने की बात कर रहे हैं। बच्चों तुम भी तो हक्का बक्का रह गये होगे न यह जवाब सुन कर।

बादशाह बोले — “बीरबल, यह तुम क्या कह रहे हो? जो हमारी मूँछें खींचे हम उसको मिठाई दें? कहीं तुम पागल तो नहीं हो गये हो? तुम जानते हो तुम क्या कह रहे हो?”

बीरबल बड़ी नम्रता से मुस्कुरा कर बोले — “जहाँपनाह, मैं बिल्कुल भी पागल नहीं हूँ और मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।”

बादशाह बोले — “तो फिर तुम ऐसा जवाब कैसे दे सकते हो?”

बीरबल फिर नम्रता से बोले — “क्योंकि जहाँपनाह, केवल एक ही आदमी है जो आपकी मूँछें खींचने की जुरत कर सकता है और वह है आपका पोता।”

बीरबल का यह जवाब सुन कर बादशाह इतना अधिक खुश हुए कि उन्होंने तुरन्त अपनी एक अँगूठी निकाल कर बीरबल को दे दी।



## 7 वीरबल ने मेहमान को पहचानना

तो बच्चों एक बार क्या हुआ कि एक धनी आदमी ने वीरबल को अपने घर दावत पर बुलाया। बताये हुए समय पर वीरबल उसके घर दावत खाने जा पहुँचे।

पहुँच कर उन्होंने वहाँ क्या देखा कि वहाँ तो बड़ी भीड़ जमा है। उस धनी आदमी ने वीरबल का बड़े प्यार से स्वागत किया और उनको अन्दर ले गया।

वीरबल इतनी बड़ी भीड़ को देख कर कुछ सकुचा से गये। वह बोले — “मुझे नहीं मालूम था कि आपके यहाँ इस दावत में इतने सारे मेहमान होंगे।”

वह धनी व्यक्ति नम्रता से बोला — “जनाब, यहाँ मेहमान तो केवल एक ही है, बाकी तो सारे मेरे नौकर चाकर हैं। हाँ आप मेरे दूसरे मेहमान हैं। क्या आप बता सकते हैं कि आपके अलावा यहाँ वह दूसरा मेहमान कौन है?”

अब बच्चों इतनी बड़ी भीड़ में मेहमान को पहचानना कोई आसान काम तो था नहीं फिर भी वीरबल बोले — “हो सकता है कि मैं उस मेहमान को पहचान लूँ। आप ऐसा करें कि कोई चुटकुला सुनायें तो शायद मैं पहचान जाऊँ।”

उस धनी आदमी की तो कुछ समझ में नहीं आया कि एक चुटकुला मेहमान को पहचानने में कैसे सहायता कर सकता है पर फिर भी वह वीरबल के कहने पर एक चुटकुला सुनाने पर राजी हो गया।

उस धनी आदमी ने एक बहुत ही अच्छा चुटकुला सुनाया। उस चुटकुले को सुन कर सभी ठहाका मार कर हँस पड़े परन्तु वीरबल ने इतना बेकार का चुटकुला अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं सुना था सो वह नहीं हँस सका।

उस धनी आदमी ने अब वीरबल से कहा — “आपके कहे अनुसार मैंने चुटकुला सुना दिया अब आप बताइये कि वह दूसरा मेहमान कौन है?”

वीरबल ने एक आदमी की ओर इशारा किया और कहा — “आपका दूसरा मेहमान वह है।”

यह सुन कर तो वह धनी आदमी और भी अधिक आश्चर्य में पड़ गया और बोला — “आपने बिल्कुल ठीक पहचाना पर आपने उस आदमी को इतनी भीड़ में पहचाना कैसे?”

वीरबल बोले — “अरे यह तो बड़ी आसान सी बात थी क्योंकि ऐसे चुटकुले पर केवल मालिक के नौकर ही हँस सकते हैं इसलिये मैंने उस दूसरे मेहमान को तुरन्त ही पहचान लिया।”

## 8 थोड़ी कम थोड़ी ज्यादा

बच्चों एक बार बीरबल की 5 साल की बेटी भी उनके साथ शाही दरबार में गयी। जब बादशाह अकबर ने उसको देखा तो अचानक उनके दिमाग में यह खयाल आया कि क्यों न वह बीरबल की बेटी की हाजिर जवाबी और करारे जवाबों का इम्तिहान ले कि वह भी अपने पिता की तरह से होशियार है कि नहीं।

सो उन्होंने उससे बात करनी शुरू की। बादशाह ने उससे पूछा — “बिटिया, क्या तुमको फारसी भाषा आती है?”

लड़की बोली — “हुजूर, थोड़ी कम थोड़ी ज्यादा।”

बादशाह उसके इस जवाब का मतलब नहीं समझे सो उन्होंने बीरबल से पूछा कि उस बच्ची के जवाब का क्या मतलब था।

बीरबल बोले — “हुजूर यह कह रही है कि यह फारसी उन लोगों से ज्यादा जानती है जो फारसी बिल्कुल नहीं जानते और उन लोगों से थोड़ा कम जानती है जो फारसी अच्छी तरह जानते हैं।

अकबर समझ गये कि बीरबल की बेटी भी बीरबल की तरह हाजिर जवाब और तेज़ निकलेगी।



## 9 वीरबल का खूबसूरत जवाब

एक बार की बात है कि बादशाह अकबर ने एक औरत को बड़े काले से, बदसूरत से और भोंडे से बच्चे को प्यार करते, छाती से लगाते और चूमते हुए देखा।

यह सब देख कर बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कोई औरत किसी ऐसे बच्चे को कैसे प्यार कर सकती है।

जब उनकी समझ में कुछ न आया तो जब वह अगले दिन राज दरबार में आये तो उन्होंने सारा किस्सा वीरबल को सुनाया और पूछा कि ऐसा कैसे हो सकता है?

वीरबल बोले — “हुजूर, वह उसका अपना बच्चा रहा होगा क्योंकि हर माँ के लिये उसका अपना बच्चा ही दुनियाँ भर में सबसे सुन्दर होता है।”

बादशाह के चेहरे से वीरबल ने तुरन्त ही जान लिया कि बादशाह उनके जवाब से कुछ ज़्यादा खुश नहीं हुए सो उन्होंने बादशाह के सामने ही एक दरबान को बुलाया और उसको आज्ञा दी कि वह अगले दिन दुनियाँ का सबसे खूबसूरत बच्चा राज दरबार में पेश करे।

अगले दिन वह दरबान एक बहुत ही बदसूरत, भोंडे, दाँत आगे को निकले हुए, खड़े बाल वाले बच्चे को ले कर राज दरबार में

हाजिर हुआ और उसे बादशाह के सामने खड़ा करके बोला —  
“हुजूर यही संसार का सबसे खूबसूरत बच्चा है।”

बादशाह ने पूछा — “तुम यह बात पूरे यकीन के साथ कैसे कह सकते हो कि यही संसार का सबसे खूबसूरत बच्चा है?”

दरबान सिर झुका कर बोला — “जहाँपनाह, यहाँ से जाने के बाद जब मैं घर पहुँचा तो मैंने अपनी समस्या अपनी पत्नी को बतायी तो उसने कहा कि इसमें तो कोई समस्या ही नहीं है।

संसार में हमारे बेटे से खूबसूरत तो और कोई और बच्चा है ही नहीं। और उसने मुझे हमारे बेटे को यहाँ लाने की राय दी।”

## 10 सबसे अधिक कुलीन भिखारी

बच्चों क्या तुमने कभी कोई कुलीन भिखारी शब्द सुना है? नहीं सुना न? तो कोई बात नहीं लो आज सुनो।

एक दिन बादशाह अकबर ने वीरबल से पूछा — “वीरबल, क्या यह मुमकिन है कि कोई आदमी सबसे नीचा भी हो और सबसे अधिक भला भी हो?”

वीरबल बोले — “जी हाँ जहाँपनाह, बिलकुल मुमकिन है।”

बादशाह बोले — “तो उसे हमारे सामने पेश किया जाये।”

“जो हुकुम सरकार का।” कह कर वीरबल चले गये।

अगले दिन वीरबल एक भिखारी को ले कर लौटे और उसे बादशाह के सामने पेश किया और बोले — “हुजूर, यहाँ पर बैठे हुए लोगों में यह आदमी सबसे नीचा भी है और सबसे अधिक कुलीन भी।”

बादशाह अकबर उसे देख कर बोले — “यह तो सच हो सकता है वीरबल कि यह सबसे नीचा आदमी है पर इसका क्या सबूत है कि यह सबसे अधिक कुलीन भी है।”

वीरबल सिर झुका कर बोले — “जहाँपनाह, इसको बादशाह के सामने आने का मौका मिला क्या यही इसके सारे भिखारियों में सबसे अधिक कुलीन होने का सबूत नहीं है?” बादशाह वीरबल का यह जवाब सुन कर चुप हो गये।

## 11 वफादार माली

एक बार बादशाह अकबर अपने बागीचे में टहल रहे थे कि वह एक पत्थर से टकरा गये और गिर गये। एक तो बादशाह उस दिन पहले से ही कुछ दुखी से थे और ऊपर से उनका पत्थर से टकरा कर गिरना।

बादशाह को जोर का गुस्सा आ गया और अगले ही दिन उन्होंने उस माली को गिरफ्तार करने और उसको फाँसी पर चढ़ाने का हुकुम जारी कर दिया।

अब जब माली को फाँसी की सजा दी जा रही थी तो उससे उसकी आखिरी इच्छा पूछी गयी। माली ने कहा कि वह मरने से पहले एक बार बादशाह के दर्शन करना चाहता था।

मरने वाले की आखिरी इच्छा तो पूरी की ही जाती है सो उसको बादशाह के सामने शाही दरबार में लाया गया। माली बादशाह के सिंहासन के पास पहुँचा और उसने जोर से गला साफ करते हुए बादशाह के पैरों पर थूक दिया।

बादशाह को और भी अधिक गुस्सा आ गया और उन्होंने उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया?

क्योंकि माली ने यह सब वीरबल के कहने पर किया था इसलिये वीरबल उठे और बोले — “हुजूर, इस बदकिस्मत माली से अधिक वफादार आज और कोई भी आदमी नहीं है।”

बादशाह ने पूछा “क्यों?”

वीरबल बड़ी शान्ति से बोले — “इस बात से डरते हुए भी कि आपने उसको एक बहुत छोटी सी गलती के लिये फाँसी की सजा दी है, उसने आपके लिये एक ऐसी वाजिब वजह पैदा की जिसके लिये उसको फाँसी की सजा दी जा सकती है और इस तरह से उसने आपको बदनामी से बचा लिया।”

यह सुन कर बादशाह को अपनी गलती का एहसास हो गया और उनका गुस्सा काफूर की तरह उड़ गया।

उन्होंने उसकी फाँसी की सजा रद्द कर दी और उसको कुछ सोने की मुहरें दे कर रिहा कर दिया।

## 12 बीरबल ने अपने आपको बचाया

एक बार बीरबल ने हँसी हँसी में बादशाह अकबर को कुछ कह दिया। पर बादशाह भी कोई बुद्धू तो थे नहीं। उनको बीरबल का वह मजाक बिल्कुल भी पसन्द नहीं आया सो उन्होंने बीरबल को अपने दरबार से ही नहीं बल्कि अपने शहर आगरा से ही निकल जाने का हुकुम दिया।

बीरबल ने भी अपना बोरिया बिस्तर उठाया और आगरा शहर छोड़ कर वहाँ से चले गये।

पर दो चार दिन ही बीते थे कि बादशाह को बीरबल की याद सताने लगी। उनको बीरबल के बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता था पर वह करें क्या? उनके पास कोई चारा नहीं था।

वह बीरबल को कैसे बुलायें, उसे कहाँ ढूँढ़ें। उनको तो उनका पता ही नहीं था कि वह हैं कहाँ और लोगों को भी उनका पता नहीं था।

एक दिन एक अक्लमन्द साधु बादशाह के दरबार में आया और उसने उनको वीरबल को ढूँढने की तरकीब बतायी। अकबर को वह तरकीब समझ में आ गयी सो उन्होंने वैसा ही किया जैसा उस साधु ने उनसे करने के लिये कहा था।

उन्होंने अपने राज्य में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई आदमी आधी धूप और आधी छाँह में उनके पास आयेगा बादशाह उसको एक हजार सोने की मुहरें देंगे।

मुनादी पिटवाना माने ढिंढोरा पिटवाना। इसमें शहर के चौराहों पर ढोल पीट कर राजा का आदेश या सन्देश जनता तक पहुँचा दिया जाता है। और मुहर कहते हैं सिक्के को। सो राजा ने आधी धूप और आधी छाँह में आने वाले को एक हजार सोने के सिक्के देने की मुनादी पिटवा दी।



अगले ही दिन एक गाँव वाला एक बान की चारपायी अपने सिर पर रख कर दरबार में आया और अपना इनाम माँगा। उसने कहा कि वह आधी धूप और आधी छाँह में वहाँ तक आया था इसलिये उसको उसका इनाम दे दिया जाये।

अकबर समझ गये कि यह आदमी अपने आप तो यह काम कर नहीं सकता फिर किसने इसको ऐसा करने के लिये कहा। पूछताछ

करने पर पता चला कि वीरबल ने ही उसे यह करने के लिये कहा था।

अकबर यह सुन कर बहुत खुश हुए। उस गाँव वाले को तो उन्होंने अपनी मुनादी के मुताबिक 1000 सोने के सिक्के दे कर विदा किया और तुरन्त ही वीरबल को आगरा वापस बुला लिया।

और दोनों में फिर वही मसखरी चलने लगी।

### 13 वीरबल ने न्याय किया

बच्चों अब तक तो तुमको पता चल ही गया होगा कि वीरबल का दिमाग कितनी तेज़ी से चलता था और कठिन से कठिन समस्याएँ भी वह कितनी आसानी से और हँसी हँसी में सुलझा देते थे।

एक बार एक किसान ने एक आदमी से एक कुँआ खरीदा। अगले दिन जब वह किसान उस कुँए से पानी लाने गया तो उस आदमी ने उस किसान को उस कुँए से पानी खींचने से मना कर दिया।

किसान बेचारा बहुत दुखी हुआ कि कुँआ खरीद कर भी वह उस कुँए का पानी इस्तेमाल नहीं कर सकता था। सो वह बादशाह अकबर के दरबार में आया और बादशाह से न्याय की प्रार्थना की।

बादशाह अकबर ने बीरबल को बुलाया और उनसे यह मामला सिलटाने के लिये कहा। बीरबल ने उस आदमी को बुलाया जिसने किसान को कुँआ बेचा था।

बीरबल ने पूछा — “जब तुमने यह कुँआ इस किसान को बेच दिया तो फिर तुम उसको उस कुँए से पानी क्यों नहीं खींचने देते?”

वह आदमी चतुराई से बोला — “बीरबल, मैंने उसको कुँआ बेचा है कुँए का पानी नहीं। इसलिये वह उस कुँए का पानी नहीं ले सकता।”

बीरबल भी कम नहीं थे। उन्होंने मुस्कुरा कर उस आदमी से कहा — “ठीक, लेकिन यह तो तुम मानते हो कि वह कुँआ तुमने उस किसान को बेच दिया तो इस हिसाब से अब यह कुँआ किसान का हो गया।

और तुम कहते हो कि यह पानी तुम्हारा है। तो तुमको भी इस किसान के कुँए में अपना पानी रखने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह कुँआ तो अब तुम उस किसान को बेच चुके।

तो या तो तुम किसान को अपना पानी उसके कुँए में रखने के लिये किराया दो और या फिर अपना पानी उसके कुँए से निकाल लो।”

उस आदमी की समझ में आ गया कि उसकी चाल बेकार गयी। उसने किसान को कुँए से पानी खींचने की इजाज़त दे दी।



बच्चो, ऐसी ही एक कहानी इंगलैंड के महान कवि और नाटककार शेक्सपीयर ने भी लिखी है उसका नाम है “द मर्चेन्ट औफ वेनिस”। बहुत ही सुन्दर और अक्लमन्दी की कहानी है वह भी। तुमको कभी मौका मिले तो जरूर पढ़ना।<sup>3</sup>

## 14 केवल एक सवाल

बीरबल की अक्लमन्दी की प्रशंसा बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी। बीरबल की प्रशंसा सुन कर एक बार एक विद्वान बादशाह अकबर के दरबार में आया और उसने बीरबल को अपने एक सवाल का जवाब देने के लिये कहा।

वह विद्वान बीरबल की परीक्षा लेना चाहता था कि बीरबल वाकई उतने ही अक्लमन्द थे कि नहीं जितना कि उसने उनके बारे में सुन रखा था सो बीरबल ने कहा “पूछो।”

उसने बीरबल से पूछा — “तुम 100 आसान सवालों के जवाब देना ज़्यादा पसन्द करोगे या एक मुश्किल सवाल का?”

उस दिन अकबर और बीरबल दोनों ही कुछ थके हुए थे और घर जाने की जल्दी में थे सो बीरबल एक मुश्किल सवाल का जवाब देने के लिये राजी हो गये।

<sup>3</sup> This story has been given in the book “Nyaya Ki Kahaniyan” (Justice), by Sushma Gupta in Hindi language.

उस विद्वान ने बीरबल से पूछा — “पहले कौन आया, मुर्गी या अंडा?”

बीरबल ने बिना कुछ सोचे समझे जवाब दिया — “मुर्गी।”

यह सुन कर वह विद्वान बीरबल की हाजिर जवाबी पर दंग रह गया। वह उनसे पूछे बिना न रह सका — “तुम्हें कैसे पता?”

बीरबल तुरन्त बोले — “हम लोग केवल एक सवाल पर राजी हुए थे और उसका जवाब मैंने तुम्हें दे दिया इसलिये अब दूसरा कोई सवाल नहीं।” कह कर बीरबल और अकबर अपने अपने घर चले गये।

## 15 बीरबल ने एक ज्योतिषी की जान बचायी

एक बार बादशाह अकबर ने एक ज्योतिषी की बड़ी तारीफ सुनी कि वह बड़ी सही बात बताता था सो उन्होंने उस ज्योतिषी को अपने दरबार में बुलवा भेजा।

उन्होंने उससे कहा — “सुना है कि तुम बहुत सही बातें बताते हो।” ज्योतिषी यह सुनते ही काँप गया। वह सोचने लगा कि आज तो वह बेमौत मारा जाने वाला है।

बादशाह आगे बोले — “यह बताओ कि तुम कब मरने वाले हो?”

ज्योतिषी काँपते हुए बोला — “हुजूर मुझे अपनी कुंडली देखनी पड़ेगी।”

बादशाह बोले — “ठीक है, हम तुम्हें एक घंटे का समय देते हैं। तुम अपनी कुंडली देखो और हमें तुरन्त बताओ।”

जान बची और लाखों पाये। वह ज्योतिषी कुंडली देखने की बजाय भागा भागा बीरबल के पास आया और उनको सारा किस्सा बताया। बीरबल ने उसको ढाँढस बँधाया और समझाया कि उसे क्या करना है।

ज्योतिषी एक घंटे के बाद दरबार में लौटा और बादशाह से बोला — “जहाँपनाह, मैं बादशाह से तीन दिन पहले मरूँगा।”

बादशाह समझ गये कि ज्योतिषी झूठ बोल रहा था पर फिर भी वह कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहते थे इसलिये उन्होंने उसे जाने दिया और इस तरह बीरबल ने उस ज्योतिषी की जान बचायी।

## 16 जल्दबाजी का फैसला

एक बार बादशाह अकबर अपने घोड़े पर सवार आम के एक बगीचे के पास से गुजर रहे थे कि एक तीर उनके बहुत ही करीब से हो कर गुजर गया। बादशाह डर गये। उनके सिपाही उस आम के

बगीचे में घुस गये और एक लड़के को पकड़ लाये जिसने वह तीर चलाया था।

बादशाह ने उस लड़के से पूछा कि वह बादशाह को क्यों मारना चाहता था। वह लड़का डरते हुए बोला कि वह बादशाह को बिल्कुल भी नहीं मारना चाहता था। वह तो केवल एक आम तोड़ना चाहता था ऊँची शाख से। वह तीर इत्तफाक से बादशाह की तरफ आ गया।

बादशाह बहुत गुस्से में थे सो वह उस लड़के की कोई बात सुनने को तैयार ही नहीं थे। उन्होंने हुकुम दिया कि उस लड़के को उसी तरह मार दिया जाये जिस तरह वह उनको मारना चाहता था।

सो तुरन्त ही एक सिपाही ने उस लड़के को एक पेड़ के तने से बाँध दिया और तीर उसकी ओर साध कर खड़ा हो गया।

बीरबल भी वहीं पास में खड़े थे और यह तमाशा देख रहे थे। जब वह सिपाही लड़के को पेड़ से बाँध रहा था तब उनसे नहीं रहा गया, वह ज़ोर से बोले — “हुजूर, आप यह क्या कर रहे हैं यह ठीक नहीं है कि आप लड़के को बाँध कर मारें क्योंकि जब उसने तीर चलाया था तब आप भी बँधे हुए नहीं थे।

दूसरे अगर आप उसको तीर मारना ही चाहते हैं तो उसी तरह मारिये जैसे उसने आपको मारा था। यानी आपका निशाना वह लड़का नहीं आम होना चाहिये और फिर उस तीर को आम को बचा कर लड़के को लगाना चाहिये।”

अब तक बादशाह कुछ शान्त हो चुके थे। उनको लगा कि बीरबल ठीक कह रहे थे और वह उस लड़के के साथ अन्याय कर रहे थे। उन्होंने तुरन्त ही अपने सिपाही को उस लड़के को छोड़ देने का हुक्म दे दिया।

तो इस तरह बची उस लड़के की जान।

## 17 बीरबल ने इम्तिहान पास किया

बच्चों एक बार एक पंडित बादशाह अकबर के दरबार में आया और उसने उनके दरबारियों की परीक्षा लेनी चाही। बादशाह राजी हो गये। एक नियत समय पर सारे दरबारी इकट्ठा हुए।

उस पंडित के पास एक लोटा था जो एक कपड़े से ढका था। उसने वह लोटा बीच में रख दिया और सबसे पूछा कि उस लोटे में क्या है।

अब वह लोटा तो कपड़े से ढका हुआ था कैसे पता चले कि उस लोटे में क्या था। सारे दरबारी परेशान से चुपचाप बैठे थे, न कुछ बोल पा रहे थे न कुछ बता पा रहे थे।

आखिर बीरबल उठे। उन्होंने लोटे पर से कपड़ा हटाया, उसके अन्दर झाँका और बोले — “इस लोटे के अन्दर तो कुछ भी नहीं है यह खाली है।”

पंडित बोला — “मगर तुमने तो यह तब बताया जब तुमने उस पर से कपड़ा हटा कर देख लिया।”

बीरबल तुरन्त बोले — “पर पंडित जी आपने तो ऐसा कुछ नहीं कहा था कि बरतन को खोलना नहीं है।”

पंडित समझ गया कि यहाँ वह गलती कर गया। उसने बादशाह को सिर झुकाया, बीरबल की तारीफ की और चला गया।

## 18 भारी बोझा

एक बार एक औरत बीरबल के पास उनसे सहायता माँगने गयी। उसने बीरबल से कहा — “बीरबल, बादशाह अकबर मेरी जमीन पर जहाँ मेरा घर है एक बिल्डिंग बनवाना चाहते हैं। हम वहाँ पर बहुत साल से रहते चले आ रहे हैं इसलिये हम वहाँ से हटना नहीं चाहते।”

बीरबल ने उसको ढाँढस बँधाया और कहा कि वह अपनी पूरी कोशिश करेगा कि वहाँ वह बिल्डिंग न बने।

कुछ दिनों बाद उस जमीन पर काम शुरू हो गया। एक दिन बादशाह अकबर उस जगह को देखने गये। बीरबल भी उनके साथ थे। एक जगह पर बीरबल ने बहुत सारी बोरियाँ रखी देखीं पास ही

रेत का ढेर पड़ा था सो उन्होंने वे बोरियाँ रेत से भरनी शुरू कर दीं।

बादशाह ने बीरबल से पूछा — “बीरबल, यह तुम क्या कर रहे हो?”

बीरबल बोले, “मैं अगले जन्म के लिये कुछ पुन्य कमा रहा हूँ।” अकबर को यह सुन कर बड़ा आनन्द आया और वह भी बीरबल के साथ बोरियाँ रेत से भरने लग गये।

थोड़ी सी बोरियाँ भर जाने के बाद बीरबल ने बादशाह अकबर से एक बोरी उठाने के लिये कहा। अकबर ने बोरी उठाते हुए कहा — “अरे बीरबल, यह बोरी तो बहुत भारी है।”

बीरबल बोले — “ज़रा सोचिये हुज़ूर, जब इस ज़मीन की यह एक बोरी मिट्टी आपको इतनी भारी लग रही है तो इस पूरी ज़मीन की मिट्टी से जब आपकी बिल्डिंग बन जायेगी तब वह आपको कितनी भारी लगेगी?”

अकबर समझ गये कि बीरबल क्या कहना चाहते थे। उन्होंने तुरन्त ही उस ज़मीन पर काम बन्द करा दिया।

## 19 बीरबल की खिचड़ी

बीरबल की यह कहानी बहुत मशहूर है और इतनी मशहूर है कि अब तो यह एक मुहावरा बन गया है - बीरबल की खिचड़ी पकाना<sup>4</sup>। पर तुमको शायद यह पता नहीं होगा कि यह मुहावरा बना कैसे। तो लो सुनो यह कहानी।

जाड़े का समय था। सारे तालाबों का पानी जमने जैसा हो रहा था। अकबर और बीरबल अपने शाही बागीचे में सैर कर रहे थे।

ठंड महसूस करने के लिये बादशाह अकबर ने एक तालाब के पानी में हाथ डाला और तुरन्त ही बाहर निकाल लिया। उस पानी की ठंड महसूस करके बादशाह के दिमाग में एक खयाल आया और उन्होंने बीरबल से पूछा — “बीरबल, क्या कोई आदमी पैसों के लिये कुछ भी कर सकता है?”

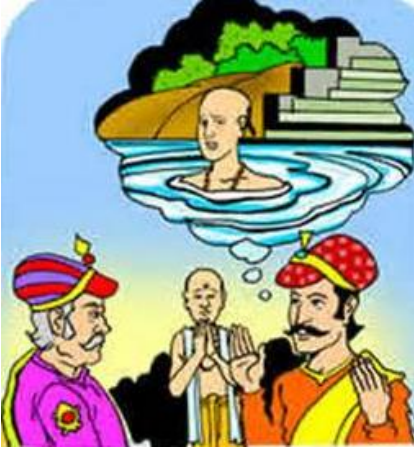
बीरबल बोले — “जी जनाब, अगर उसको पैसों की वाकई जरूरत हो तो।”

बादशाह बोले — “अच्छ तो इसको साबित करो।”

अगले दिन बीरबल एक बहुत ही गरीब आदमी को ले कर आये जिसके पास कोई पैसा नहीं था और बोले — “हुजूर यह आदमी पैसों के लिये कुछ भी कर सकता है।”

<sup>4</sup> Read the stories of about the origin of many proverbs as how did they come into being in the book “Kahavaton Ke Janm Ki Kahaniyan” (Proverbs), by Sushma Gupta in Hindi language.





बादशाह उस आदमी से बोले — “क्या तुम सरदी की इस रात में एक रात यमुना के ठंडे पानी में खड़े हो कर गुजार सकोगे? अगर तुम गुजार सकते हो तो हम तुम्हें सोने की 1000 मुहरें देंगे।”

अब 1000 मुहरें तो बहुत होती हैं। वह गरीब आदमी बेचारा उन 1000 मुहरों के लालच में आ गया और वह उस सरदी की रात यमुना के पानी में गुजारने चला गया।

सरदी बहुत थी पर 1000 सोने की मुहरें भी उसके लिये कम नहीं थीं। बादशाह के कुछ चौकीदार भी वहाँ खड़े थे, यह देखने के लिये कि वह वाकई उस ठंडे पानी में खड़ा रहा कि नहीं और उसने कोई धोखा तो नहीं किया।

अगले दिन वह अपना इनाम लेने के लिये बादशाह के दरबार में पहुँचा तो बादशाह ने उससे पूछा — “यह तो बताओ कि तुम इतने ठंडे पानी में सारी रात कैसे खड़े रहे?”

आदमी बोला — “सरकार, करीब 500 गज की दूरी पर एक लैम्प पोस्ट जल रहा था मैं बस वही देख कर खड़ा रहा।”

यह सुन कर बादशाह ने कहा कि यह आदमी इस इनाम के लायक नहीं है क्योंकि वह आदमी यकीनन उस लैम्प पोस्ट से गरमी ले रहा था इसलिये वह पूरी तरीके से उस ठंडी रात में पानी में खड़ा नहीं रहा।

यह सुन कर वह गरीब आदमी बेचारा बहुत ही निराश हुआ कि वह बेचारा सारी रात तो उस सरदी की रात में यमुना के ठंडे पानी में खड़ा रहा और उसे इनाम भी नहीं मिला।

बीरबल भी यह सब सुन रहे थे। उनको बादशाह का यह तर्क बिल्कुल भी ठीक नहीं लगा कि 500 गज दूर से वह आदमी उस लैम्प पोस्ट से गरमी ले रहा था। उस समय तो उन्होंने कुछ कहना ठीक नहीं समझा पर उन्होंने सोच लिया कि वह बादशाह को इसका जवाब जरूर देंगे।

अगले दिन बीरबल बहुत देर तक दरबार नहीं गये। बादशाह ने उनका बहुत देर तक इन्तजार किया पर फिर भी जब वह नहीं आये तो उन्होंने अपने एक आदमी को उनके घर भेजा कि देख कर आओ कि आज बीरबल दरबार में क्यों नहीं आये।

नौकर ने वापस आ कर बादशाह को बताया कि बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं। वह कहते हैं कि जब उनकी खिचड़ी पक जायेगी तब वह अपनी खिचड़ी खा कर दरबार में आयेंगे।

एक घंटा हुआ, दो घंटे हुए, तीन घंटे हुए पर बीरबल की खिचड़ी अभी तक नहीं पकी थी। ऐसी कैसी खिचड़ी थी बीरबल की जो इतनी देर के बाद भी नहीं पकी थी?

नौकर कई बार जा कर वापस आ चुका था पर बीरबल के आने के कोई आसार नहीं थे सो इस बार बादशाह ने खुद जा कर देखने का विचार किया।



बादशाह बीरबल के घर गये। बादशाह को अपने घर आया जान कर बीरबल बादशाह को लेने बाहर आये और उनको बड़े आदर से अन्दर ले गये।

बादशाह ने बताया कि क्योंकि बीरबल बहुत देर से दरबार में नहीं आये थे इसलिये वह बीरबल को खुद ही देखने के लिये चले आये थे।

बीरबल बोले — “सरकार, मैं अपनी खिचड़ी बना रहा था। जैसे ही मेरी खिचड़ी बन जायेगी मैं खिचड़ी खा कर तुरन्त ही आता हूँ।”

“क्या मैं तुम्हारी खिचड़ी देख सकता हूँ कहाँ है वह?”

“क्यों नहीं, जरूर सरकार।” कह कर बीरबल उनको वहाँ ले गये जहाँ उनकी खिचड़ी बन रही थी।

बादशाह को यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि खिचड़ी की हॉडी एक पेड़ की बड़ी ऊँची सी शाख पर लटक रही थी और नीचे जमीन पर दो लकड़ियों की सहायता से आग जल रही थी।

बादशाह से पूछे बिना नहीं रहा गया — “बीरबल, इस तरह से तो यह तुम्हारी खिचड़ी जिन्दगी भर तक नहीं पकने की। इतनी दूर से इतनी कम आग से खिचड़ी कैसे पकेगी? तुम्हें क्या हो गया है?”

बीरबल बोले — “सरकार, यह खिचड़ी भी उसी तरह पकेगी जिस तरह से उस लैम्प पोस्ट से उस गरीब आदमी को 500 गज दूरी से गरमी मिल रही थी।”

बादशाह समझ गये कि उन्होंने उस गरीब आदमी को उसका इनाम न दे कर बड़ा अन्याय किया। बादशाह बीरबल का जवाब सुन कर उलटे पैरों दरबार वापस लौट गये और उस गरीब आदमी को दरबार में फिर से पेश करने का हुकुम दिया।

तुरन्त ही वह आदमी दरबार में लाया गया। बादशाह ने उसको उसका 1200 सोने के सिक्के इनाम दे कर आदर सहित विदा किया।

इस तरह बीरबल ने उस गरीब आदमी को उसका इनाम दिलवाया।

आज भी जब किसी काम में किसी को असाधारण रूप से देरी होती है तो लोग कहते हैं “अरे, क्या कर रहे थे? क्या बीरबल की खिचड़ी पका रहे थे?”

## 20 ऊँट का दूध

बीरबल की यह कहानी भी बहुत मजेदार है।

दरबार में बीरबल से बहुत सारे लोग जला करते थे क्योंकि बीरबल बादशाह को बहुत प्यारे थे और वह हर बात में उनसे सलाह लिया करते थे। उधर बीरबल भी हर काम में उनसे बाजी मार ले जाया करते थे जो उनको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था। सो एक दिन मौका मिलते ही उन्होंने बीरबल को नीचा दिखाने की सोची।

बादशाह के महल में किसी को एक घाव हो गया। शाही वैद्य बुलाया गया। उसने बादशाह को सुझाया कि वह घाव तभी ठीक हो सकता था जब उस पर ऊँट का दूध लगाया जाये।

बादशाह ने अपने दरबार में सबसे ऊँट का दूध लाने के लिये कहा। अब ऊँट का दूध कहाँ से लाया जाये। सारे दरबारी चुपचाप बैठे रहे कुछ न बोल सके। पर क्योंकि दरबारियों को तो बीरबल को नीचा दिखाना था सो सबने बीरबल का नाम सुझाया कि वही एक हैं जो ऊँट का दूध ला सकते हैं।

आखिर यह काम बीरबल को सौंपा गया। बीरबल ने बादशाह को बहुत समझाने की कोशिश की कि ऊँट का दूध नहीं होता पर बादशाह को तो घाव ठीक करना था और जब शाही वैद्य ने बताया था वह घाव ऊँट के दूध से ठीक हो सकता था तो ऊँट का दूध

जरूर होता होगा। शाही वैद्य झूठ थोड़े ही बोल सकता है।

बीरबल समझ गये कि यह दरबारियों की कोई चाल है उनको नीचा दिखाने की। बीरबल ने फिर एक तरकीब सोची। अगले दिन बीरबल दरबार नहीं गये। जब बादशाह ने बीरबल को दरबार में नहीं देखा तो पूछा कि बीरबल कहाँ हैं और क्यों नहीं आये।

किसी को कुछ पता नहीं था कि बीरबल कहाँ हैं सो उनके घर एक आदमी भेज कर पुछवाया गया कि वह ठीक तो हैं।

जब वह नौकर बीरबल के घर पहुँचा तो घर के बाहर ही बीरबल की लड़की कपड़े धो रही थी। नौकर ने उसी से पूछा कि आज बीरबल दरबार नहीं आये क्या बात है।

लड़की ने जवाब दिया — “रात बीरबल के बच्चा हुआ है इसी लिये वह दरबार नहीं आ पाये।” नौकर को यह जवाब कुछ अटपटा लगा पर वह लौट गया और बादशाह को बता दिया कि बीरबल को कल रात बच्चा हुआ है इसलिये वह दरबार में नहीं आये।

यह अटपटा जवाब सुन कर बादशाह का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया और वह खुद बीरबल के घर जा पहुँचे सच्चाई जानने के लिये।

बीरबल बोला — “जहाँपनाह, जब ऊँट दूध दे सकता है तो मेरे बच्चा क्यों नहीं हो सकता?”

बादशाह यह सुन कर बहुत शरमिन्दा हुए और वापस चले गये। उन्होंने अपना हुकुम रद्द कर दिया और शाही वैद्य को बुला कर बहुत डाँटा।

## 21 पिंजरे का शेर

जैसा कि तुम्हें पता ही है कि वीरबल की अक्लमन्दी और हाजिरजवाबी की प्रशंसा बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी। यहाँ तक कि दूसरे देशों में भी फैली हुई थी।

तो वीरबल की प्रशंसा सुन कर एक बार एक राज्य के राजा ने अपने एक आदमी को बादशाह अकबर के दरबार में वीरबल का इम्तिहान लेने के लिये भेजा।

वह आदमी हिन्दुस्तान आया और बादशाह अकबर के दरबार में हाजिर हुआ। वह अपने साथ एक बहुत बड़ा पिंजरा लाया था जिसमें एक शेर बन्द था।

उसने वह पिंजरा दरबार में बादशाह के सामने रख दिया और बोला — “बादशाह सलामत, यह शेर इस पिंजरे में बन्द है। हमारे राजा का कहना है कि आपके दरबार में जो कोई भी इस शेर को बिना पिंजरा खोले बाहर निकाल देगा उसको ये सोने की मुहरें दीं जायेंगी।”

कह कर उसने सोने की मुहरों से भरा एक थैला वहीं पिंजरे के पास ही रख दिया।

बादशाह ने अपने सब दरबारियों से कहा कि वे उस शेर को पिंजरे में से बिना पिंजरा खोले निकालने की कोशिश करें।

बहुत सारे दरबारी उठे, उन्होंने उस पिंजरे को इधर से देखा उधर से देखा, ऊपर से देखा नीचे से देखा पर समझ न पाये कि उस शेर को पिंजरे में से बिना पिंजरा खोले कैसे निकाला जाये। वे सभी मुँह लटका कर बैठ गये।

अब बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा कि वह शेर को बिना पिंजरा खोले पिंजरे में से बाहर निकालें। बीरबल ने भी उस पिंजरे को इधर से देखा उधर से देखा, ऊपर से देखा नीचे से देखा और फिर बोले — “हुजूर, आग मँगवायी जाये, मैं इस पिंजरे को गरम करना चाहता हूँ।”

यह सुन कर सब लोग बड़े आश्चर्य में पड़ गये। ज़रा सोच कर बताओ बच्चो कि बीरबल ने आग क्यों मँगवायी और उस आग से वह शेर को पिंजरे में से बाहर कैसे निकालते?

जो तुम सोच रहे हो यही बात वहाँ दरबार में बैठे सब दरबारियों ने भी कही। वे बोले — “पिंजरा गरम करने से तो शेर मर जायेगा।”



पर जब बीरबल ने कहा है कि आग मँगवायी जाये तो आग मँगवायी गयी। बीरबल ने आग से पिंजरा गरम किया और कुछ देर में ही शेर बाहर आ गया।

क्या तुम अब बता सकते हो कि बीरबल ने वह शेर बिना पिंजरा खोले बाहर कैसे निकाल दिया? बच्चो, वह शेर असली था ही नहीं। वह शेर तो मोम का बना था। जैसे ही पिंजरा गरम हुआ वह शेर पिघल गया।

बीरबल ने उसको देखते ही पहचान लिया था कि वह शेर मोम का बना हुआ था। इसी लिये बीरबल ने आग मँगवायी, पिंजरा गरम किया और वह शेर पिघल कर बाहर आ गया।

बाहर पड़े मोम के ढेर की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने उस आदमी से कहा — “लो यह रहा तुम्हारा शेर। इसे ले जा कर अपने राजा को दे देना।”

यह कह कर बीरबल ने सोने की मुहरों की थैली उठायी और अपनी जगह पर आ कर बैठ गये।

## 22 राज्य में कितने कौए

एक बार ईरान देश से नसीर पाशा नाम का एक बहुत बड़ा विद्वान बादशाह अकबर के दरबार में आया। हालाँकि वह एक बहुत बड़ा विद्वान था पर वह जिद्दी और अकडू भी बहुत था।

उसने बादशाह से कहा — “ओ हिन्दुस्तान के बादशाह, ईरान तक में यह मशहूर है कि आपके दरबार में बहुत अक्लमन्द मन्त्री हैं, बहुत होशियार कलाकार हैं और आपकी सेना में बहुत होशियार कमान्डर हैं।

मैं इतनी दूर से आपकी राजधानी में उनको अपनी आँखों से देखने के लिये आया हूँ। मैं ईरान के बादशाह के दरबार में खुद न तो कोई कलाकार हूँ और न ही किसी सेना का कोई आदमी हूँ पर वहाँ मैं सबसे ज़्यादा होशियार आदमी समझा जाता हूँ।

मैं अपनी अक्लमन्दी और हाजिरजवाबी का आपके किसी भी दरबारी से मुकाबला करने आया हूँ। मेहरबानी करके मुझे इजाज़त दी जाये।”

बादशाह को ऐसे मुकाबले बहुत पसन्द आते थे क्योंकि हालाँकि वह खुद तो पढ़े लिखे नहीं थे पर वह अक्लमन्द लोगों की बहुत इज़्ज़त करते थे और यह देखते थे कि उनके राज्य में उनकी ठीक

से इज्जत हो और उनको उसका ठीक से इनाम मिले। पर उनको अकडूपन बिल्कुल पसन्द नहीं था।

बादशाह को पाशा कुछ अकडू लगा तो उनको यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सोचा कि उसका यह अकडूपन तोड़ा जाये।

बादशाह को वीरबल पर पूरा भरोसा था और वह पाशा के घमंड को तोड़ना चाहते थे सो उन्होंने इस मुकाबले की इजाजत दे दी।

उन्होंने फिर वीरबल से कहा — “वीरबल, तुमने नसीर पाशा को सुना कि उसने क्या कहा? हमारे मन्त्रियों में से तुम इनसे बात करो और मुकाबले की तैयारी करो।”

वीरबल सिर झुका कर बोले — “जो हुकुम सरकार।” वीरबल भी होशियारी और हाजिरजवाबी के ऐसे मुकाबलों के लिये हमेशा तैयार रहते थे।

पाशा बोला — “ओ वीरबल, तुम बादशाह अकबर के सबसे ज्यादा होशियार मन्त्री हो। मैं तुमसे केवल एक सवाल का जवाब चाहता हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारी दिल्ली में इस समय कितने कौए हैं?”

अकबर और उनके दरबारी यह अजीब सा सवाल सुन कर आश्चर्य में पड़ गये कि यह कैसा सवाल है पर वीरबल बिल्कुल शान्त थे।

बीरबल बोले — “पाशा, तुमने बहुत ही अच्छा सवाल पूछा है। मुझे कल तक का समय दो ताकि मैं उनको गिन कर तुमको उनकी ठीक ठीक गिनती बता सकूँ।”

नसीर पाशा बोला — “ठीक है।” पाशा को यकीन था कि बीरबल कौओं को कभी नहीं गिन पायेगा।

अगले दिन बादशाह का दरबार लगा। बादशाह के सभी मन्त्री मौजूद थे। बीरबल भी थे। पाशा भी आये। पाशा को विश्वास था कि आज वह बीरबल को हरा कर ही रहेगा।

जब सब आराम से बैठ गये तो बादशाह अकबर बीरबल से बोले — “बीरबल, क्या तुम नसीर पाशा के सवाल का जवाब देने के लिये तैयार हो?”

बीरबल हाथ में एक छोटा सा कागज पकड़े बोले — “जी हुजूर।” कह कर उन्होंने उस कागज में से पढ़ा **43576** कौए।

फिर वह पाशा की तरफ मुड़े और बोले — “पाशा जी, आप चाहें तो खुद अपने आप इनको गिन सकते हैं। अगर आपकी गिनती मेरी गिनती से ज़्यादा हो तो समझिये कि वे ज़्यादा कौए पास के गाँव से राजधानी घूमने के लिये आये हैं।

और अगर आपके कौओं की गिनती मेरी गिनती से कम हो तो समझिये कि उतने कौए राजधानी से बाहर घूमने के लिये गये हुए हैं।”

बीरबल का यह चतुराई भरा जवाब सुन कर बादशाह और उनके दरबारियों ने सबने मिल कर बीरबल के जीतने की खुशी में खूब तालियाँ बजायीं।

नसीर पाशा समझ गया कि वह यहाँ हार गया है। उसका घमंड टूट गया था और वह बादशाह को सलाम कर के ईरान वापस चला गया।

## 23 अकबर का लालच

मुसलमानों का रमज़ान का महीना चल रहा था। इस महीने में मुसलमान सारा दिन रोज़ा या व्रत रखते हैं फिर शाम को सूरज छिपने के बाद ही खाते हैं। इसको रोज़ा इख़्तियारना बोलते हैं। और फिर सुबह सूरज निकलने से पहले खाना बन्द कर देते हैं।

रमज़ान के महीने में बादशाह अकबर जब अपना रोज़ा इख़्तियारते थे तो उनके साथ उनके बहुत सारे दरबारी लोग भी अपना रोज़ा इख़्तियारते थे।

ऐसे ही एक दिन एक शाम रोज़ा इख़्तियारते समय बीरबल भी उनके साथ थे।

खाना खाने के बाद खजूर खाने का दौर चला। सब लोग अपनी अपनी कुरसियों पर बैठे हुए खजूर खा रहे थे। वे खजूर

खाते जाते थे और उनकी गुठलियाँ अपनी अपनी कुरसियों के नीचे फेंकते जाते थे। बीरबल बादशाह की कुरसी के पास बैठे थे।

धीरे धीरे सबकी कुरसियों के नीचे खजूर की गुठलियों का ढेर लगता चला गया। गुठलियों के ढेर को बढ़ता देख कर बादशाह को शरारत सूझी।

चारों तरफ सावधानी से देखते हुए जब कोई उनकी तरफ नहीं देख रहा था तो बादशाह ने अपनी कुरसी के नीचे की खजूर की गुठलियाँ धीरे से अपना पैर मार कर बीरबल की कुरसी के नीचे खिसका दीं।

कुछ पल बाद ही बादशाह बीरबल की कुरसी के नीचे की तरफ इशारा करते हुए जोर से बोले — “बीरबल, तुम तो बहुत ही लालची हो। देखो तो तुमने कितने सारे खजूर खाये हैं। तुम्हारी कुरसी के नीचे कितनी सारी गुठलियाँ हैं।”

वहाँ बैठे सारे लोगों का ध्यान बीरबल की तरफ गया तो वे बीरबल की तरफ देख कर हँसने लगे और उनका मजाक बनाने लगे।

बीरबल समझ गये कि बादशाह ने उनके साथ चाल खेली है। उन्होंने चारों तरफ अपनी निगाह घुमायी तो देखा कि सब लोगों की कुरसियों के नीचे खजूरों की गुठलियाँ पड़ी हुई हैं पर बादशाह की कुरसी के नीचे खजूर की कोई गुठली नहीं पड़ी है।

शान्ति से बीरबल बोले — “हुजूर, मेरे लिये तो लालची होना ठीक है क्योंकि मैं तो आपका एक छोटा सा मन्त्री हूँ। कम से कम मैंने तो केवल खजूर ही खाये हैं खजूर की गुठलियाँ तो छोड़ दी हैं पर आपने तो लालच में आ कर खजूर के साथ साथ उनकी गुठलियाँ भी खा लीं हैं।”

यह सुन कर राजा बहुत शरमिन्दा हुए। उनकी बात उन्हीं के सिर आ पड़ी थी।

## 24 आम और उसकी गुठलियाँ

यह भी इससे पहले वाली जैसी ही कहानी है। इस कहानी में बादशाह अकबर और बीरबल आम खा रहे थे। बादशाह को कुछ शरारत सूझी तो उन्होंने अपने आम खा कर उसकी गुठलियाँ बीरबल के सामने रखनी शुरू कर दीं।

कुछ देर बाद बीरबल ने देखा कि उनके सामने तो आम की बहुत सारी गुठलियाँ जमा हो गयी हैं और बादशाह के सामने एक भी गुठली नहीं है। बीरबल चुप रहे और अपने आम खाते रहे।

कुछ देर बाद बादशाह बोले — “बीरबल आम खाने में इतना भी क्या लालच करना कि आदमी इतने सारे आम एक साथ खा जाये। देखो न कितनी सारी गुठलियाँ पड़ी हैं तुम्हारे सामने।”

बीरबल तो इसका जवाब देने के लिये तैयार बैठे थे वह बोले — “हुजूर मैंने तो केवल आम ही खाये हैं पर आपका लालच तो मेरे लालच से भी बड़ा है कि आपने तो आम खाये तो खाये आमों की गुठलियाँ भी खा लीं।”

बीरबल की यह बात सुन कर बादशाह बहुत शरमिन्दा हुए।

## 25 कुछ छोटी छोटी कहानियाँ

### सच और झूठ में फर्क

एक बार बादशाह अकबर ने अपने राज दरबारियों से पूछा — “कौन बतायेगा केवल तीन शब्दों में कि झूठ और सच में कितना फर्क है?”

सारे दरबारी उन तीन या कम शब्दों के बारे में सोचने लगे जो सच और झूठ के फर्क को बता सकें लेकिन काफी समय बीत गया और दरबारी लोग नहीं बता सके।

तब राजा ने बीरबल से पूछा। बीरबल ने थोड़ा सा इधर उधर देख कर कहा — “हुजूर, चार अंगुल का।”

बादशाह बीरबल का जवाब सुन कर दंग रह गये फिर बोले “ऐसा कैसे?”



वीरबल बोले — “ऐसा ही है हुजूर। क्योंकि आपकी आँखें सच देखती हैं परन्तु आपके कान अक्सर झूठ भी सुनते हैं और आँख और कान में केवल चार अंगुल का फर्क है।”

### छोटी लाइन बड़ी लाइन

एक दिन बादशाह अकबर ने जमीन पर एक लाइन खींची और अपने राज दरबारियों से कहा कि उनमें से कोई भी उस लाइन को छुए बिना ही छोटा कर दे।

जब कोई भी दरबारी उस लाइन को बिना छुए छोटा न कर सका तो अकबर ने वीरबल से यह करने के लिये कहा।

वीरबल तुरन्त उठे और उस लाइन के बराबर में एक बड़ी लाइन खींच दी। अब अकबर की लाइन वीरबल की लाइन से छोटी थी।

### चाँद और सूरज क्या नहीं देख सकते□

एक बार बच्चों बादशाह ने अपने राज दरबार में पूछा — “ऐसी कौन सी चीज़ है जिसे सब लोग देख सकते हैं परन्तु चाँद और सूरज नहीं देख सकते।”

यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब किसी को नहीं आ सकता था क्यों कि चाँद सूरज की रोशनी में तो हर आदमी हर चीज़

देख सकता है फिर चाँद और सूरज जहाँ हों वहाँ कौन सी चीज़ ऐसी हो सकती है जिसे वे खुद भी नहीं देख सकते ।

हर बार की तरह इस बार भी जवाब बीरबल ने ही दिया,  
“अँधेरा हुजूर । चाँद और सूरज अँधेरा नहीं देख सकते ।”



## देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें [www.Scribd.com/Sushma\\_gupta\\_1](http://www.Scribd.com/Sushma_gupta_1) पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

Write to :- E-Mail : [hindifolktales@gmail.com](mailto:hindifolktales@gmail.com)

- 1 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-1
- 2 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-2
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई-मीडियम पर सोसायटी ऑफ फौकलोर, लन्दन, यू के के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

Write to :- E-Mail : [thefolkloresociety@gmail.com](mailto:thefolkloresociety@gmail.com)

- 1 जंजीवार की लोक कथाएँ — 10 लोक कथाएँ — सामान्य छापा मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — 45 लोक कथाएँ — सामान्य छापा मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

To obtain them write to :- E-Mail [drsapnag@yahoo.com](mailto:drsapnag@yahoo.com)

- 1 रैवन की लोक कथाएँ-1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — प्रभात प्रकाशन
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2 — प्रभात प्रकाशन
- 4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 6 बंगाल की लोक कथाएँ — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टेकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

- 1 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1  
<http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html>
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2  
<http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html>
- 3 रैवन की लोक कथाएँ-1  
<http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html>
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-2  
<http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html>
- 5 रैवन की लोक कथाएँ-3  
<http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html>
- 6 इटली की लोक कथाएँ-1  
[http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1\\_30.html](http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html)

7 इटली की लोक कथाएँ-2

<http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html>

8 इटली की लोक कथाएँ-3

<http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html>

9 इटली की लोक कथाएँ-4

<http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html>

10 इटली की लोक कथाएँ-5

<http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html>

11 इटली की लोक कथाएँ-6

<http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyar.html>

12 इटली की लोक कथाएँ-7

<http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html>

13 इटली की लोक कथाएँ-8

<http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html>

14 इटली की लोक कथाएँ-9

<http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html>

15 इटली की लोक कथाएँ-10

<http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html>

16 जंजीवार की लोक कथाएँ

[http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post\\_54.html](http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html)

17 चालाक ईकटोमी

[http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post\\_88.html](http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html)

18 नौस देशों की लोक कथाएँ-1

<http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html>

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं

<https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596>

1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाएँ

2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

**Facebook Group**

<https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks>

Updated on Dec 27, 2018



## लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में एम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी एड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में एम एल एस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोटी के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट ऑफ़ सर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू एस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर ऑफ़ लाइब्रेरी एंड इनफ़ॉर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी - [www.sushmajee.com](http://www.sushmajee.com)। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रही हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला - कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाएँ हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी - हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगी।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाएँ सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 1200 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाएँ” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा

मई 2018